6

पूर्व बाल्यावस्था में सामाजिक संवेगात्मक विकास

सुनैना मित्तल*

प्रस्तावना

सभी बच्चों के व्यवहार, गुणों और क्षमताओं में व्यक्तिगत भिन्नता होती है। कुछ बच्चे बहुत मिलनसार, स्वाधीन व जिज्ञासु होते हैं जबकि अन्य बच्चे दूसरों पर निर्भर रहने वाले तथा संकोची प्रवृत्ति के होते हैं। हर बच्चे का अपना अलग व्यक्तित्व होता है। यह कुछ अंश तक जन्मजात होता है किंतु बहुत कुछ यह बच्चों के पर्यावरणीय तत्वों पर निर्भर करता है–

- बच्चे से संबद्ध समाज या सांस्कृतिक समूह के मूल।
- घर में पुरस्कार एवं दंड की प्रणाली।
- समान उम्र वाले बच्चों के साथ बराबरी का व्यवहार।
- आस-पास के वातावरण के साथ-साथ जनसंचार के साधनों में व्यवहार का आदर्श।

लेखिका स्वयं भी आई.आई.टी. नर्सरी स्कूल, हौज़खास, नयी दिल्ली में कार्यरत है। इस विद्यालय में मुख्यत: बच्चों को स्वयं करके सीखने के लिए प्रेरित किया जाता है। उन्हें एक प्रेरणादायक खेल वातावरण दिया जाता है जिससे उनका बौद्धिक, भाषायी, सामाजिक, संवेगात्मक तथा शारीरिक विकास हो सके।

प्रारंभिक बाल शिक्षा कार्यक्रम

प्रारंभिक बाल शिक्षा एक ऐसा कार्यक्रम है जो तीन से आठ वर्ष तक के बच्चों को पर्यावरण के साथ अंत: क्रिया करने, सामूहिक क्रियाकलाप में सहभागिता करने तथा समस्याओं का समाधान करने के लिए प्रोत्साहित करता है। इस कार्यक्रम में बच्चों को प्रत्यक्ष अनुभव दिया जाता है, जिससे उनमें सीखने संबंधित कौशलों का विकास हो सके। इसे पूर्व प्राथमिक शिक्षा भी कहते हैं। इस समय बच्चों को औपचारिक शिक्षा नहीं दी जाती।

कैसा होता है इस उम्र में बच्चा

पूर्व बाल्यावस्था (जन्म से आठ वर्ष की आयु) में क्रोध, भय, ईर्ष्या, स्नेह, जिज्ञासा और हर्ष जैसी संवेगात्मक दशाओं का अनुभव बच्चे को होता है। इनमें से प्रत्येक संवेग की अभिव्यक्ति यद्यपि शैशवावस्था में हो जाती है। तथापि इस अवस्था में कुछ नए संवेग विकसित हो जाते हैं और प्रत्येक संवेग को उकसाने वाले ऐसे उद्दीपन भी उत्पन्न हो जाते हैं जिनका अनुभव अधिकांशत: छोटे बालकों को सामान्य रूप से होता है। इस अवस्था में बालक का सामाजिक परिवेश विकसित हो जाता है। अब वह पास पड़ोस के बच्चों के साथ खेलना आरंभ कर

* *शिक्षिका,* आई.आई.टी. नर्सरी स्कूल, हौज़खास, नयी दिल्ली

देता है। अत: बच्चे में समायोजन की समस्या उत्पन्न होने की प्रबल संभावना होती है जिससे वह तनाव का अनुभव करता है। बालक जितना छोटा और अनुभवहीन होगा, तनाव के उत्पन्न होने की संभावना उतनी ही अधिक होगी।

प्रारंभिक बाल शिक्षा स्तर पर बच्चा स्फूर्ति से भरा होता है। इस स्तर पर सरल क्रियाओं की योजना बनाकर स्वयं उन्हें स्वतंत्र रूप से करने की पहल करता है। यदि बालक को उसकी इच्छानुसार कार्य नहीं करने दिया जाता है तो बालक जल्दी निरुत्साहित हो जाता है और झल्लाहट अनुभव करता है। अत: अभिभावकों और शिक्षिका का यह दायित्व होता है कि वे बच्चे को यह समझाने में सहायता करें कि क्या करना उचित होगा और क्या नहीं। बाल्यकाल में शिशु की यह आवश्यकता होती है कि हर समय कोई न कोई वयस्क उस पर ध्यान दे। जब शिक्षिका उसे छूती है, उसे थपथपाती है या गले से लगा लेती है तो बच्चे खुश हो जाते हैं।

पूर्व बाल्यावस्था में सामाजिक विकास के मूलभूत सिद्धांत

- बच्चे के जिस व्यवहार को पुरस्कृत और प्रोत्साहित किया जाता है, उसे वह दोहराता है एवं उससे सीखता है। जिस व्यवहार के लिए उसे दंड दिया जाता है व हतोत्साहित किया जाता है वह उसे छोड़ता जाता है।
- बच्चे अपने आस-पास के वातावरण का निरीक्षण करके अनेक प्रकार के व्यवहार एवं क्रियाएँ सीखते हैं। माता-पिता, शिक्षिकाएँ, बड़े बच्चे आदि सभी बच्चे के समक्ष आदर्श प्रस्तुत करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं।

बच्चे केवल व्यवहार और क्रियाओं का अनुसरण नहीं करते, बल्कि इसमें अभिवृत्तियों एवं विश्वासों को भी मन में धारण करने की बात शामिल है।

पूर्व बाल्यावस्था में स्वाभाविक संवेगात्मक समस्याएँ

प्राय: सभी प्रारंभिक बाल शिक्षा केंद्रों में एक या अधिक बच्चे ऐसे होते हैं—

- जो चुपचाप बैठे होते हैं तथा कक्षा में कराई जाने वाली क्रियाओं में रुचि नहीं लेते हैं।
- जो अत्यधिक आक्रामक होते हैं तथा अपने आप उपद्रव मचाते हैं।
- कुछ बच्चे अत्यधिक चंचल होते हैं और अपने इसी स्वभाव के कारण वह किसी भी क्रिया में एकाग्रचित नहीं हो पाते।
- कुछ बच्चे सदैव कक्षा में शांत रहते हैं। हो सकता है कि माता-पिता और शिक्षिका के द्वारा यह डर बैठा दिया जाना कि वह उसे सजा देगी या गृह तनाव जैसे माता-पिता के बीच लड़ाई आदि अन्य कोई भी कारण हो सकता है।

क्या करें शिक्षक?

शिक्षक बच्चों के क्रिया-कलाप एवं खेल के माध्यम से संवेगों पर नियंत्रण करना सिखा सकते हैं। कुछ सुझाव इस प्रकार हैं–

कविता के द्वारा

बच्चों को आधे गोले में खड़ा करें। शिक्षिका बच्चों के साथ क्रिया करते हुए निम्नलिखित गीत गाती हैं —

बिल्ली खुशी से गाती है
बिल्ली खुशी से गाती है
जब वह मुँह धोती है
जो नहीं मुँह को धोता है

उसका मुँह गंदा होता है
बिल्ली खुशी से गाती है
जब वो नाखून काटती है
जो नाखून नहीं काटता है
उसके नाखून गंदे होते हैं
जब वो बात बनाती है
जब वो रोज़ नहाती है
जब वो रोज़ नहाती है

बच्चे इस तरह की कविताएँ हाव-भाव के साथ गा सकते हैं। वे खुश होते हैं और उनमें स्वच्छ आदतों का विकास होता है।

दैनिक वार्तालाप से

व्यक्तिगत स्वच्छता के विषय में दैनिक क्रियाओं से संबंधित वार्तालाप करने से बच्चों को अच्छी आदतों को समझने में सहायता मिलती है।

बच्चों को अच्छी आदतों से परिचित कराने के लिए उन्हें कहानियाँ, कविताएँ व कठपुतली के खेल आदि भी महत्वपूर्ण होते हैं, जैसे–

आओ करें दाँत में मंजन
आओ करें दाँत में मंजन
जैसे चले गाड़ी का इंजन
छुक-छुक आगे, छुक-छुक पीछे
छुक-छुक ऊपर, छुक-छुक नीचे
मंजन करके कर लो कुल्ला
हा-ही, हा-ही हुल्ला गुल्ला

कार्ड का खेल

बच्चों को कुछ कार्ड दिए जाएँगे जिनमें अच्छी और बुरी आदतों के चित्र होंगे। बच्चों से उनका वर्गीकरण कराया जाएगा।

स्वतंत्र खेल

बच्चों के सामने कई आकर्षक क्रियाएँ प्रस्तुत कर उन्हें अपने लिए क्रियाओं का चुनाव करने के लिए प्रोत्साहित करें कि वे निर्णय लेने के साथ-साथ उसकी मौखिक अभिव्यक्ति भी करें।

पूर्व बाल्यावस्था में प्रमुख उद्देश्य बच्चे को आत्म-केंद्रित से समाज-केंद्रित बनने की दिशा में सहायता देना होता है। उदाहरणार्थ, दूसरों के साथ खेलने, दूसरों के साथ होने, दूसरों की सहायता करने और साधारण तथा सामाजिक बनने की दिशा में सहायता देना होता है।

प्रारंभिक बाल शिक्षा कार्यक्रम या पूर्व-प्राथमिक शिक्षा का उद्देश्य बच्चों में अच्छी आदतों का निर्माण करना है।

व्यक्तिगत आदतें

- व्यक्तिगत स्वच्छता एवं सफ़ाई का ध्यान रखना।
- भोजन की सही आदत।
- शौच की सही आदत।
- खाने से पहले व बाद में हाथ धोना।
- खेलने के बाद खिलौने को वापस अपनी जगह पर रखना।

सामाजिक आदतें

- दूसरों की मदद करना, दूसरों के समान व सम्पत्ति का आदर करना।
- शिक्षिका तथा अपने से बड़ों के साथ सहयोग करना।
- अपनी बारी की प्रतीक्षा करना।
- अच्छे सामाजिक तरीके सीखना।

सामाजिक संवेगात्मक विकास के लिए सुझाव

- बच्चे को समझाएँ कि पेड़ों की पत्तियों, टहनियों और फूलों को न तोड़ें।
- मानव तथा पशु दोनों के जीवन को समान समझना।
- यदि संभव हो तो बच्चों की सहायता से बागबानी करें। इससे बच्चों के अंदर प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता का विकास होगा।
- पर्यावरण तथा उसकी सुरक्षा से संबंधित कहानियाँ व गीत सुनाना।
- कक्षा के अंदर व बाहर खेल के मैदान में पड़े कागज़ के टुकड़ों, कंकड़ों आदि को कूड़ेदान में डालने को कहें जिससे बच्चे स्वच्छ पर्यावरण का महत्त्व समझेंगे।

बालक के सामाजिक संवेगात्मक विकास में शिक्षिका की अहम भूमिका होती है। हर बच्चे को स्नेहपूर्ण व सुखद वातावरण देना शिक्षिका का मुख्य कर्तव्य होना चाहिए। प्रारंभिक बाल शिक्षा स्तर का बच्चा स्फूर्ति से भरा होता है तथा इस समय बच्चों को सरल क्रियाएँ करानी चाहिए व उन्हें स्वतंत्र रूप से खेलने देना चाहिए।

शिक्षिकाओं एवं माता-पिता की भूमिका

- प्रत्येक बच्चे पर ध्यान दें।
- सदैव बच्चों को उनके नाम से पुकारें इससे उनमें आत्मगौरव की भावना जागेगी।
- सभी बच्चों की बराबर प्रशंसा करें और उन्हें प्रोत्साहित करें।
- हर बच्चे के अच्छे गुणों को सभी के सामने उजागर करने की कोशिश करें।
- हर बच्चे को बोलने का अवसर दें और उसे अपनी भा वनाओं को दूसरों के सामने व्यक्त करने दें।
- बच्चों की रचनात्मक, अभिनयात्मक क्रियाओं, संगीत, तथा रचनात्मक क्रियाओं के माध्यम से अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का व्यवहार दें।
- बच्चे की तुलना न करें। हर बच्चा अपने में विशिष्ट है।
- बच्चों की आलोचना न करें। उससे उनके अंदर हीन भावना उत्पन्न होती है।
- बच्चों को कभी भी मारें-पीटें नहीं और कभी गाली भी न दें। वे आपका अनुकरण करेंगे और बुरा व्यवहार सीखेंगे।
- लड़कों-लड़कियों को अलग-अलग तरह का व्यवहार करने के लिए प्रोत्साहित न करें।